मशरूम उत्पादन से बनी सफल उद्यमी

दिव्या कुमारी और **बी.सी. अनु**

“ बिहार के उत्तरी क्षेत्र में स्थित मुजफ्फरपुर जिला अपनी कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है, जहां अधिकांश परिवार सीमांत एवं लघु कृषक श्रेणी से संबंधित हैं। इन किसानों की आजीविका मुख्यत: पारंपरिक खेती पर आधारित है, किंतु बढ़ती उत्पादन लागत, सीमित संसाधन तथा घटते लाभ के कारण कृषि आय लगातार चुनौतीपूर्ण होती जा रही है। ऐसी परिस्थितियों में वैकल्पिक कृषि आधारित उद्यम किसानों की आय वृद्धि एवं ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने के प्रभावी माध्यम के रूप में उभर रहे हैं। इसी क्रम में कुढ़नी प्रखंड के चन्द्रहट्टी गांव की श्रीमती निक्की कुमारी ने वैज्ञानिक मशरूम उत्पादन को अपनाकर आत्मनिर्भरता की प्रेरणादायक मिसाल प्रस्तुत की है। कृषि विज्ञान केंद्र, तुर्की से प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात इन्होंने वैज्ञानिक पद्धतियों के आधार पर मशरूम उत्पादन कार्य प्रारंभ किया और धीरे-धीरे इसे एक संगठित एवं लाभकारी उद्यम के रूप में विकसित किया। आज इनका यह प्रयास न केवल इनके परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर रहा है, बल्कि क्षेत्र की अन्य ग्रामीण महिलाओं को भी स्वरोजगार एवं उद्यमिता की दिशा में प्रेरित कर रहा है। ”

ग्रामीण परिवेश में सीमित कृषि संसाधनों के बीच जीवनयापन करने वाले अधिकांश परिवारों की तरह श्रीमती निक्की कुमारी का परिवार भी पारंपरिक खेती पर निर्भर था। लगभग 1 एकड़ भूमि पर धान, गेहूं एवं मक्का जैसी फसलों की खेती से परिवार की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति तो हो जाती थी, किंतु अतिरिक्त आय अथवा बचत का कोई स्थायी स्रोत उपलब्ध नहीं था। इसके अतिरिक्त मौसम की अनिश्चितता तथा बाजार मूल्य में उतार-चढ़ाव के कारण कृषि आय भी स्थिर नहीं रह पाती थी, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति लगातार चुनौतीपूर्ण बनी रहती थी।

ऐसी स्थिति के कारण ही श्रीमती निक्की के लिए बारहवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आर्थिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों के कारण आगे की पढ़ाई जारी रखना संभव नहीं हो सका। ऐसे में आत्मनिर्भर बनने तथा परिवार की आय बढ़ाने के लिए वैकल्पिक रोजगार की आवश्यकता महसूस होने लगी।

इसी दौरान कृषि विज्ञान केंद्र, तुर्की द्वारा आयोजित मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम की जानकारी मिली। प्रशिक्षण के दौरान इन्हें मशरूम उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीकों, कम लागत में अधिक लाभ, सीमित स्थान में उत्पादन तथा महिलाओं के लिए इसकी उपयुक्तता के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई।

विपणन नीति

श्रीमती निक्की कुमारी ने मशरूम उत्पादन के साथ-साथ विपणन प्रबंधन पर भी विशेष ध्यान दिया। इन्होंने स्थानीय बाजारों, होटलों एवं खुदरा विक्रेताओं से सीधे संपर्क स्थापित कर अपने उत्पादों के लिए स्थायी बाजार विकसित किया। इसके अतिरिक्त ताजा मशरूम एवं मूल्य संवर्धित उत्पादों की सीधे उपभोक्ताओं को बिक्री कर मध्यस्थों पर निर्भरता कम की। महिला स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से उत्पादों का वितरण कर इन्होंने ग्रामीण स्तर पर विपणन नेटवर्क को मजबूत बनाया। आकर्षक पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग अपनाने से इनके द्वारा बनाए गए उत्पादों की बाजार में पहचान बढ़ी तथा उपभोक्ताओं का विश्वास भी मजबूत हुआ। स्थानीय मेलों, कृषि प्रदर्शिनियों एवं त्योहारों के अवसर पर स्टॉल लगाकर इन्होंने अपने उत्पादों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया। इन रणनीतियों के परिणामस्वरूप इन्हें स्थायी ग्राहक वर्ग प्राप्त हुआ और उत्पादों की मांग में निरंतर वृद्धि हुई।

कृषि विज्ञान केंद्र, तुर्की, मुजफ्फरपुर-844127, डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (बिहार)

मशरूम उत्पादन की यह विशेषता है कि इसे घर के खाली कमरे अथवा छोटे शेड में भी आसानी से किया जा सकता है, इनके लिए अत्यंत प्रेरणादायक सिद्ध हुई। वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान ने निक्की जी के मन में आत्मविश्वास जगाया और इन्होंने मशरूम उत्पादन को स्वरोजगार एवं आत्मनिर्भरता के प्रभावी माध्यम के रूप में अपनाने का निर्णय लिया।

केवीके की प्रभावी भूमिका

कृषि विज्ञान केंद्र, तुर्की द्वारा निक्की कुमारी जी को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन से संबंधित सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को वैज्ञानिक मशरूम उत्पादन तकनीकों से जोड़कर स्वरोजगार एवं उद्यमिता के लिए सक्षम बनाना था।

प्रशिक्षण के अंतर्गत ऑयस्टर मशरूम की उन्नत किस्मों का चयन, भूसा आधारित सब्स्ट्रेट की तैयारी, फॉर्मेलिन एवं बाविस्टिन द्वारा उपचार, गुणवत्तायुक्त स्पॉन का उपयोग तथा बैग भरने की वैज्ञानिक विधियों की जानकारी दी गई। इसके साथ ही 70-90 प्रतिशत आर्द्रता एवं 20-30 डिग्री सेल्सियस तापमान प्रबंधन, रोग एवं कीट नियंत्रण तथा स्वच्छता प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर भी विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

केवीके, तुर्की द्वारा समय-समय पर तकनीकी परामर्श एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया, जिससे उत्पादन प्रणाली में निरंतर सुधार संभव हो सका। कटाई उपरांत प्रबंधन के अंतर्गत ग्रेडिंग, पैकेजिंग, शीत भंडारण तकनीक तथा ताजा मशरूम के त्वरित विपणन की जानकारी भी दी गई। इसके अतिरिक्त मूल्य संवर्धन प्रशिक्षण के माध्यम से यह बताया गया कि प्रसंस्करण द्वारा उत्पाद का मूल्य बढ़ाने के साथ उसकी भंडारण क्षमता भी बढ़ाई जा सकती है।

मशरूम उत्पादन इकाई

प्रशिक्षण के दौरान मशरूम अचार, मशरूम पाउडर, सूखा मशरूम (डिहाइड्रेशन), मशरूम नमकीन एवं बड़ी निर्माण के साथ-साथ लेबलिंग एवं पैकेजिंग तकनीकों का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। इस समग्र प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन ने श्रीमती निक्की कुमारी को केवल एक उत्पादक तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें एक सफल कृषि उद्यमी के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्रीमती निक्की कुमारी ने वर्ष 2023 से अचार बनाना सीखने के बाद वर्ष 2024 में 100 किलोग्राम मशरूम का अचार तैयार किया, जिसमें 25,000 रुपये खर्च हुए। अचार को 350-400 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव से आसपास के गांव में बेचा जिससे कुल आमदनी 40000 रुपये प्राप्त हुई। इस तरह श्रीमती निक्की कुमारी को 15000 रुपये शुद्ध लाभ हुआ। अब वह अपने पति के साथ मशरूम उत्पादन एवं अचार बनाने का काम कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञों द्वारा समय से प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्षण से कर रही हैं।

वर्ष 2024 तक निक्की कुमारी ने मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन गतिविधियों को सफलतापूर्वक संगठित उद्यम का रूप दे दिया। ताजा मशरूम उत्पादन से इन्हें लगभग रुपये 50,000 की शुद्ध आय

सारणी 1. वर्ष 2022 से 2024 के दौरान मशरूम उत्पादन एवं विपणन में वृद्धि

विवरण	वर्ष		
	2022	2023	2024
बैग संख्या	20	40	60
कुल उत्पादन	500 कि.ग्रा.	1,200 कि.ग्रा.	1,800 कि.ग्रा.
औसत बिक्री मूल्य	रु. 120/कि.ग्रा.	रु. 140/कि.ग्रा.	रु. 160/कि.ग्रा.

सारणी 2. वर्ष 2022-2024 के दौरान मशरूम उत्पादन का आर्थिक विश्लेषण (मुजफ्फरपुर जिला)

वर्ष 2022	राशि (रुपये)	वर्ष 2023	राशि (रुपये)	वर्ष 2024	राशि (रुपये)
कुल लागत (स्पॉन, भूसा, श्रम, दवा, बिजली)	9,000	कुल लागत	45,000	कुल लागत	90,000
कुल उत्पादन (100 कि.ग्रा. × रुपये 120)	12,000	कुल उत्पादन (500 कि.ग्रा. × रुपये 150)	75,000	कुल उत्पादन (1000 कि.ग्रा. × रुपये 160)	1,60,000
सकल आय	12,000	सकल आय	75,000	सकल आय	1,60,000
शुद्ध आय	3,000	शुद्ध आय	30,000	शुद्ध आय	50,000
बी.सी. अनुपात	1.3	बी.सी. अनुपात	1.6	बी.सी. अनुपात	1.8

प्राप्त हुई, जबकि मशरूम आधारित मूल्य संवर्धित उत्पादों, जैसे-अचार, पापड़ एवं सूखे मशरूम के निर्माण एवं विपणन से लगभग रुपये 1,00,000 की अतिरिक्त शुद्ध आय अर्जित हुई। इस प्रकार वर्ष 2024 में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन गतिविधियों से उन्हें कुल लगभग रुपये 1,50,000 की वार्षिक शुद्ध आय प्राप्त हुई, जिसने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती निक्की कुमारी की सफलता ने स्थानीय स्तर पर महिला उद्यमिता एवं स्वरोजगार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्होंने गांव की लगभग 8-10 महिलाओं को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन का प्रशिक्षण देकर इन्हें रोजगार से जोड़ा। इसके साथ ही महिला स्वयं सहायता समूह का गठन कर सामूहिक उत्पादन एवं विपणन की दिशा में भी पहल की।

इनके प्रयासों से ग्रामीण स्तर पर स्वरोजगार के नए अवसर सृजित हुए तथा परिवार की आय में स्थिरता आई। अतिरिक्त आय के कारण बच्चों की शिक्षा, पोषण एवं जीवन स्तर में सुधार हुआ। साथ ही समाज में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी एवं उद्यमिता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ।

प्रमुख उपलब्धियां

- वर्ष 2022 में सीमित स्तर से मशरूम उत्पादन की शुरुआत।

समूह आधारित उत्पादन पर रहा जोर

ऑयस्टर मशरूम का सफल उत्पादन

- वर्ष 2024 तक बी.सी अनुपात 1.8 तक पहुंचा।
- मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन से लगभग रुपये 1.50 लाख की वार्षिक शुद्ध आय अर्जित।
- क्षेत्र में सफल महिला उद्यमी के रूप में पहचान स्थापित।

भावी योजनाएं

श्रीमती निक्की कुमारी भविष्य में मशरूम आधारित उद्यम को और अधिक विस्तारित करने की योजना बना रही हैं। इसके अंतर्गत वे स्पॉन उत्पादन इकाई स्थापित कर गुणवत्तायुक्त स्पॉन की स्थानीय उपलब्धता सुनिश्चित करना चाहती हैं। साथ ही ब्रांड पंजीकरण कर राज्य स्तर पर उत्पादों के विपणन का लक्ष्य रखती हैं।

इसके अतिरिक्त वे ऑनलाइन बिक्री प्लेटफॉर्म से जुड़कर अपने उत्पादों की बाजार पहुंच बढ़ाने तथा अधिक से अधिक ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार से जोड़ने की दिशा में भी कार्य करना चाहती हैं।

श्रीमती निक्की कुमारी की सफलता यह सिद्ध करती है कि वैज्ञानिक प्रशिक्षण, तकनीकी हस्तक्षेप एवं दृढ़ इच्छाशक्ति के माध्यम से सीमित संसाधनों में भी उच्च आय अर्जित की जा सकती है। केवीके, तुर्की के मार्गदर्शन ने इन्हें तकनीकी दक्षता, आत्मविश्वास एवं बाजार की समझ प्रदान की, जिसके बल पर इन्होंने मशरूम उत्पादन को सफल उद्यम में परिवर्तित किया।

आज वे केवल एक सफल मशरूम उत्पादक ही नहीं, बल्कि मुजफ्फरपुर जिले में महिला सशक्तिकरण एवं ग्रामीण उद्यमिता की प्रेरणादायक प्रतीक बन चुकी हैं। उनके लिए मशरूम उत्पादन केवल कृषि गतिविधि नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, सम्मान एवं सशक्तिकरण की प्रेरक यात्रा है। ■

सारणी 3. वर्ष 2024 में मशरूम आधारित मूल्य संवर्धित उत्पादों का आर्थिक विश्लेषण

उत्पाद	कुल लागत (रुपये)	सकल आय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)	बी.सी. अनुपात
मशरूम अचार (100 कि.ग्रा.)	25,000	40,000	15,000	1.60
मशरूम पापड़	40,000	95,000	45,000	1.90
सूखा मशरूम	40,000	80,000	40,000	2.00
कुल	1,05,000	2,15,000	1,00,000	1.83